International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

धर्मवीर भारती : जीवन और साहित्य

डॉ0 पप्पू कुमार
हिन्दी विभाग
डॉ. जगन्नाथ मिश्रा कॉलेज, मुजफ्रपफरपुर
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्रपफरपुर

धर्मवीर भारती : जीवन और साहित्य :–

धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसम्बर 1926 ई0 को इलाहाबाद के अतरसुइया मुहल्ले में हुआ था। उनके पिता श्री चिरंजीव लाल वर्मा शाहजहाँपुर के निकट खुदागंज कस्बे के एक पुराने जमीन्दार परिवार के सदस्य थे। उन्होंने ओवरसीयरी की शिक्षा प्राप्त की। पहले म्यांमार में नौकरी की पिफर उत्तरप्रदेश लौटकर पहले मिर्जापुर में ठेकेदारी की और अंततः इलाहाबाद में बस नए स्वयं धर्मवीर भारती के शब्दों में – ''मेरा जन्म 25 दिसम्बर 1926 ई0 को इलाहाबाद के अतरसुइया मुहल्ले के मकान में हुआ। मेरे पिता का नाम श्री चिरंजीव लाल वर्मा और माता का नाम श्रीमती चंदा देवी था। परिवार का इतिहास यह था कि हमारा वंश मूलतः शाहजहाँपुर जिले (पश्चिमी उत्तरप्रदेश) के खुदागंज नाम के कस्बे का निवासी था। वहाँ हमलोगों की बहुत बड़ी जमींदारी थी। खेत और अनेक आम के बगीचे। एक बहुत बड़ी कोठी, कुछ पक्की, कुछ कच्ची। मेरे बाबा का नाम एवज राय था। वे एक धनी और दबंग जमींदार थे और उनके साथ ही व्यक्ति सदैव बन्दूक लेकर चलता था। मैं बहुत बचपन में छुट्टियों में माता–पिता के साथ खुदागंज जाया करता था और तबकी अनेक यादें अभी भी सजीव हैं। उस कोठी मे ंतीन आंगन थे और कोठी के अंदर ही दो कुएँ थे। मरदाने आंगन के पास एक बड़ा कमरा था जिसमें बन्दूकें, तलवारें, बरछियाँ, लाठियाँ लालटेनें, मशालें रखी रहती थीं और दीवार पर दो जिरह–बख्तर और एक ढाल टँगी रहती थी। कटारें और बघनखे भी ताख में रखे रहते थे। यह नहीं मालूम कि बाबा एवज रय का ौक था या मेरे ताऊ अर्शीलाल का, जो बाबा के मरने के बाद के बुजुर्ग थे।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारतीय का जीवन संघर्ष का जीवन है, उन्होंने अपना निर्माण अपनी साध्ना की बदौलत किया। उन्होंने सम्पन्नता देख थी तो गरीबी भी देखी, ऐश्वर्य देखा था तो अपने परिवार को श्रीहीन होते भी देखा। स्वयं उनके ही ाब्दों में, ''और पिफर आये चरम गरीबी के दिन। पहले पिता ने एक नौकरी स्वीकार की और आजमगढ़ जिले के मउनाथ भंजन के नोटिपफाइड एरिया के दपफतर में ओवरसीयर हो गये। मेरे वचपन के दो वर्ष मउनाथ भंजन में बीते। यह सन् 1932 का जमाना रहा होगा। उन्हीं दिनों गाँधि जी ने इक्कीस दिन का उपवास किया था। पिता खद्दर और चरखे के बजाय आजाद और भगत सिंह के प्रशंसक थे, पर उन इक्कीस दिनों में उन्हें एक वक्त खाना नहीं खाया। अन्त में गाँधि जी की पुकार पर सरकारी नौकरी से इस्तीफा देकर इलाहाबाद लौट आये। और अब ुरू हुए भयंकर गरीबी के दुर्दिन। पिता कुछ ठकेकेदारों वगैरह के लिए नक्शे–वक्शे बनाने का काम करते रहते पर उसके पूरा नहीं पड़ता था। माँ के बचे खुचे गहने वगैरह बेचकर कुछ कर्ज वगैरह लेकर उन्होंने दो मकान और बनवाये कि ये कुछ काम आएँगे। उसी बीच में माँ सख्त बीमार पड़ गयीं और दो साल तक बीमार रहीं। बीमारी की पिफक्र और कर्ज की पिफक्र ने पिता को मन और ारीर से तोड़ दिया, पिता सख्त बीमार पड़े और ाायद नवम्बर 1939 में उनकी मृत्यु हो गयी। तब मैं तरेह वर्ष का था और 8वें या 9वें दर्जे में था।

दुर्दिन में भारती में भारती का साथ उनके दूर के रिश्ते के मामा श्री अभयकृष्ण चौधरी ने दिया। भारती उन्हीं के संरक्षण में पले और माकी ने माँ से बढ़कर ममता दी।

भारतीय की प्रारंभिक शिक्षा घर पर हुई। उच्च विद्यालय की शिक्षा इलाहाबाद के डी0 ए0 वी0 स्कूल में सम्पन्न हुई। कायस्थ पाठशाला से उन्होंने 1942 में इण्टरमीडियट पास किया। 1945 में उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी0ए0 की डिग्री पास की तथा हिन्दी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने के लिए चिंतामणि मेडल से सम्मानित किया

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गया। 1945 में उन्होंने एम0ए0 में सर्वाधिक अंक प्राप्त किये। तत्पश्चात् इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा के मार्गदर्शन में सि(साहित्य पर ाोध्कार्य किया। डॉ0 भारती जितने तेजस्वी छात्रा थे उतने ही क्रांतिकारी उनके विचार भी थे। वे नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के भक्त थे और 1942 के आंदोलन में उन्होंने आगे बढ़कर भाग लिया। विद्यार्थ जीवन में उन्होंने कठिन संघर्ष के साथ घोर साध्ना की। एक ओर वे ट्यूशन के सहारे अपनी शिक्षा आगे बढ़ाते रहे तो दूसरी ओर अंग्रेजी साहित्य का उन्होंने जमकर अध्ययन किया। भारती के अनुसार, ''1942 के आंदोलन में मैंने भाग लिया और सुभाष का बड़ा प्रशंसक बना और बजीपफों तथा माका की सहायता से पढ़ता रहा। पाठ्य–पुस्तकों के अलावा कविता पुस्तकें तथा अंग्रेजी के उपन्यास पढ़ने का बेहद ाौक रहा और उसी से लेखन के बीज मन में पड़े। उनहीं दिनों मैंने ाेली, कीट्स, वर्ड्सवर्थ, टेनीसन, एमिली डिकिन्सन तथा अनेक फ्रेंच, जर्मन और स्पेनिश कवियों को अंग्रेजी अनुवाद में पढ़ा। एमिल जोला, ारत्चन्द्र, गोर्की, कुप्रिन, बालजक, डिकेन्स, विक्टरह्यूगो, दास्तावस्की तथा टॉल्स्टाय के उपन्यास पढ़े। टॉल्स्टाय का 'वार एण्ड पीस' मेरे जीवन पर स्थायी प्रभाव छोड़ गया।

बी0ए0 और एम0ए0 की पढ़ाई ट्यूशनों के सहारे चली। कुछ दिन 'अभ्युदय', 'संगम' और हिन्दुस्तानी एकेडमी में काम किया। उसी समय 'मुर्दों का गाँव', 'पृथ्वी ओ स्वर्ग' दो कहानी–संग्रह छपे–प्रारभिक। उस समय कुझ पर जयशंकर प्रसाद और ऑस्कर वाइल्ड का बहुत प्रभाव था। तभी मैं माखनलाल चतुर्वेदी के सम्पर्क में आया। उन्होंने लिखने को बहुत प्रोत्साहित किया।

भारतीय ने पहला विवाह कान्ता पन्त से किया। कान्ता पन्त एक नवोदित लेखिका थीं और उनकी प्रतिभा के कारण भारती उनकी ओर आकृ ट हुए। अपनी पुस्तक 'ठंडा लोहा' भारती ने अपनी पत्नी कान्ता भारती को ही समर्पित किया। किन्तु कान्ता भारती

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

के साथ वे बहुत दिनों तक नहीं रह सके। ''सन् 1955 के आस–पास एक पंजाबी ारणार्थी लड़की से विवाह हुआ। संस्कारों के तीव्र वैषम्य के कारण वह विवाह असपफल रहा और बाद में विच्छे हो गया।

पिफर पुष्पा भारती के साथ भारती का दूसरा विवाह हुआ। कान्ता भारती ने 'रेत की मछली' नामक उपन्यास में इन घटनाओं का उल्लेख किया है। भारती में स्वीकार करने का जितना साहस था उतनी ही नकारने की ाक्ति भी थी। भारती ने बहुत कुछ पढ़ा, बहुत सारी विचारधराओं का मंथन किया किन्तु बँध कर रहना उन्होंने कभी सीखा ही नहीं। 'परिमल', 'प्रगतिशील लेखक संघ' सबसे से सम्ब(रहे, किन्तु किसी विचारधरा के दबाव में उनहोंने सर्जन कर्म नहीं किया। बकौल ''भारती ने एम0ए0 कर लेने के बाद मार्क्सवाद का अध्ययन प्रारंभ किया। प्रगतिशील लेखक संघर्ष का स्थानीय मंत्राी भी रहा कुछ दिन, पर कम्युनिस्ओं की कट्अरता तथा देशद्रोही नीतियों से मोहभंग हुआ। तभी मैंने छहों भारतीय दर्शन, वेदान्त तथा विस्तार से वैष्णव और सन्त साहित्य पढ़ा और भारतीय चिन्तन की मानववादी परम्परा मेरे चिन्तन का मूल आधर बन गयी। उन्हीं दिनों पहले 'गुनाहों का देवता' पिफर 'प्रगतिवाद : एक समीक्षा' तथा 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' लिखा।

कविता के क्षेत्रा में मुझे छायावादी भाषा के बजाय बच्चन, नेपाल, नरेन्द्र शर्मा की काव्यभाषा अधिक ग्राह्य लगी तथा ोली, कीट्स और ऑस्कर वाइल्ड का प्रारंभिक प्रभाव काव्यशैली पर रहा। उसी समय अज्ञेय से भेंट हुई और अज्ञेय ने कुछ कविताएँ 'दूसर सप्तक' के लिए चुनीं। उसके बाद 'ठण्डा लोहा' प्रकाशित हुआ।

आजीविका के लिए भारती ने पहले ट्यूशनों का आश्रय लिया। एम0ए0 करने के दौरान उन्होंने श्री पद्मकांत मालवीय द्वारा संपादित 'अभ्युदय' में पार्ट–टाइम काम किया। एम0ए0 करने के उपरान्त 1948 से 1950 तक उनहोंने 'संगम' में इलाचन्द्र जोशी के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

साहयक संपादक के रूप में काम किया। कुछ दिनों के लिए वे हिन्दुस्तानी एकेडमी में वे उपसचिव रहे। सन् 1951 से 1960 ई0 तक वे इलाहाबद विश्वविद्यालय के हिन्दी–विभाग में प्राध्यापक रहे। इस बीच उन्होंने 'निकर्ष' और 'आलोचना' जैसे पत्रिाकाओं के संपादक–मंडल में रहकर अपना सहयोग दिया। साथ ही, हिन्दी साहित्यकोश के संपादन में भी उन्होंने डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा का सहयोग किया।

1960 ई0 में 'टाइम्स ऑपफ इंडिया' ग्रुप की पत्रिाका 'धर्मयुग' का संपादक बनकर वे मुम्बई आ गये। उन्हीं के ाब्दों में, 'सन् 1960 ई0 में बम्बई आ गया उसके पहले 'सात गीत व र्ा', 'अन्धयुग', 'कनुप्रिया', 'देशान्तर' प्रकाशित हो चुके थे। बम्बई आने के बाद 'बन्द गली का आखिरी मकान', 'कहानी–अनकहनी', 'पश्यन्ती' प्रकाशित हुए। पु पा भारती से विवाह हुआ, जिसने बहुत सुख, संतो ा और ाान्ति दी। केवल जीवन में ही नहीं वरन् विचारों और साहित्य–चितंन के क्षेत्र में भी उनका एक सार्थक, गहरा, प्रेरणाप्रद साथ मिला। इधर पत्राकारिका की व्यस्तता के कारण लिखने का उत्तम समय नहीं मिल पाता है। कुछ जो लिखा वह छपाा नहीं है।

धर्मवीर भारती को यश भी कम नहीं मिला। अनेक देशों की उन्होंने यात्राएँ की और सन् 1971 के भारत–पाक यु(सिल पर उपस्थित होकर उनहोंने रिपोर्ताज लिखा। उनकी यात्राओं का विवरण निम्नलिखित है –''सन् 1961 में कॉमनवेल्थ रिलेशन्स कमेटी के आमंत्राण पर प्रथम विदेश –यात्राा पर इंग्लैंड तथा यूरोप भ्रमण। परिश्चम जर्मनी सरकार के आमंत्राण पर 1964 में जर्मनी–यात्राा, 1966 में भारतीय दूतावास के निमंत्राण पर इण्डोनेशिया तथ थाइलैण्ड की यात्राएँ कीं। सितम्बर 1971 ई0 में मुक्ति वाहिनी सेना के साथ बांगला देश की गुप्त यात्रा की तथा क्रांति का पहला आँखों–देखा प्रामाणिक विवरण लिखा। भारत–पाक यु(, 1971 के दौरान भारतीय स्लिल–सेना के साथ वास्तविक यु(सिल पर निरंतर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उपस्थित रहकर यु(के वास्तविक मोर्चे के रोमांचक अनुभवों को लिपिब(किया। इसके पहले ऐसा काम कभी किसी भारतीय पत्राकार ने नहीं किया। भारतीय मूल की मारिशसीय जनता की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए जून 1974 में मारिशस की यात्रा की। फिर एफ्रो–एशियाई कॉन्फ्रेंस में भाग लेने के लिए पुनः मारिशस गये। 1978 में चीन की सिनुआ संवाद समिति के आमंत्रण पर भारत सरकार के डेलीगेशन के सदस्य के रूप में चीन की यात्रा पर गये। 1991 में परिवार के साथ अमेरिका–यात्रा पर गये और अपने भारत देश के तो हर प्रान्त में बार–बार अनेक यात्राएँ कीं। यात्राएँ डॉ0 भारतीय को बहुत सुख देती थीं।

इन्हें कई अलंकरण और पुरस्कार भी मिले जो निम्नलिखित हैं :– ''सन् 1972 में पद्मश्री से अलंकृत हुए। 1977 से महारा ट्र राज्य हिन्दी सातित्य अकादमी ने हिन्दी में सर्वश्रे ठ रचना को उनकी स्मृति में प्रतिव र्ा 51,000 रूपये का पुरस्कर देने की घो णा की । पुरस्कार का नाम है – 'धर्मवीर भारती महारा ट्र सारस्वत सम्मान।

1999 में कथाकार उदयप्रकाश के निर्देशन में साहित्य अकादमी, दिल्ली के लिए डॉ0 भारती पर डॉक्यूमेण्ट्री फिल्म का निर्माण हुआ। अनेक पुरस्कार–सम्मानों में से कुछ इस प्रकार है :–

1967	:	संगीत नाटक अकादमी के मनोनीत सदस्य।
1984	:	हल्दीघाटी पत्रकारिता पुरस्कार, महाराणा मेवाड़ पाउण्डेशन।
1986	:	संस्था सम्मान, उत्तरप्रदेश, हिन्दी संस्थान।
1988	:	सर्वश्रे ठ नाटककार पुरस्कार, संगीत नाटक अकादमी, नयी दिल्ली।
1989	:	डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद शिखर सम्मान, बिहार पुरस्कार।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

1989 : गणेश ांकर विद्यार्थी पुरस्कार, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।

1989 : भारत–भारतीय पुरस्कार, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्था।

1990 : महारा ट्र गौरव, महारा ट्र सरकार।

1991 : साधना सम्मान, केडिया स्मृति न्यास।

1992 : महारा ट्राच्या सुपुत्रांचे अभिनन्दन सम्मान, वसन्तराव नाईक प्रति ठान।

1994 : व्यास सम्मान, के0के0 बिड़ला फाउण्डेशन।

1996 : ासन सम्मान, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान

1977 : उत्तरप्रदेश गौरव, अभियान सम्मान संस्थान।

डॉ0 भारती बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न रचनाकार हैं। उन्होंने अनके विधाओं में लिखा है और जो भी लिखा है वह काफी महत्त्वपूर्ण लिखा है। उनकी प्रकाशित रचनाएँ निम्नलिखित हैं :–

कविता–संग्रह :–

1.	ठण्डा लोहा	–	1952
2.	सत गीत व ा	–	1959
3.	कनुप्रिया	–	1959
4.	सपना अभी भी	–	1950
5.	आद्यान्त	–	1999

6.	मेरी वाणी गैरिक वसना	–	1999

नाटक :–

7.	अंधयुग	–	1954

कहानी–संग्रह :–

8.	मुर्दों का गाँव	–	1946
9.	स्वर्ग और पृथ्वी	–	1949
10.	चाँद और टूटे हुए लोग	–	1955
11.	बन्द गली का आखिरी मकान	–	1969
12.	साँच की कलम से	–	1960

उपन्यास :–

13.	गुनाहों का देवता	–	1949
14.	सूरज का सातवाँ घोड़ा	–	1952
15.	ग्यारह सपनों का देश	–	1960

(प्रारंभ वा समापन)

निबन्ध :–

16.	ठेले पर हिमालय	–	1958
17.	पश्यन्ती	–	1969
18.	कहनी–अनकहनी	–	1970

19. कुछ चेहरे कुछ चिन्तन – 1955

20. ाब्दिता – 1977

रिपोर्ताज :–

21. यु(–यात्रा – 1972

22. मुक्त–क्षेत्रा : यु(–क्षेत्रा – 1973

आलोचना :–

23. प्रगतिवाद : एक समीक्षा – 1949

24. मानव मूल्य और साहित्य – 1960

कहानी–संग्रह :–

25. नदी प्यासी थी – 1954

ोध–प्रबन्धः–

26. सि(–साहित्य – 1968

अनुवादः–

27. ऑस्कर वाइल्ड की कहानियाँ – 1946

28. देशान्तर – 1960

(इक्कीस देशों की आधुनिक कविताएँ)

यात्रा–विवरणः–

29. यात्रा–चक्र – 1994

पत्र–संकलनः–

30. अक्षर–अक्षर यज्ञ – 1999

साक्षात्कारः–

31. धर्मवीर भारती से साक्षात्कार – 1998

ग्रन्थावलीः–

32. धर्मवीर भारती ग्रन्थावली – 1998

'ठण्डा लोहा' धर्मवीर भारती का पहला काव्य–संग्रह 1952 ई0 में प्रकाशित हुआ। संग्रह की भूमिका में धर्मवीर भारती ने कहा – ''इन कविताओं के विषय में मुझे विशेष कुछ नहीं कहना है। मैं कविताएँ बहुत कम लिख पाता हूँ और अक्सर कुछ लिख लेने के बाद मौन का एक बहुत लम्बा व्यवधन बीच में आ जाता है जिससे अगले क्रम की कविताओं और पिछले क्रम की कविताओं का तारतम्य टूटा–टूटा–सा लगने लगता है। इस संग्रह में दी गयी कविताएँ मेरे पिछले छह वर्षों की रचनाओं में से चुनी गयी हैं और चूंकि यह समय अध्कि मानसिक उथल–पुथल का रहा, अतः इन कविताओं में स्तर, भावभूमि, शिल्प और टोन की काफी विविधता मिलेगी। एकसूत्राता केवल इतनी है कि सभी मेरी कविताएँ हैं, मेरे विकास और परिपक्वता के साथ उनके स्वर बदलते गये हैं, पर आप जरा ध्यान से देखेंगे तो सभी में मेरी आवाज पहचानी–सी लगेगी।

सन्दर्भ :–

1. अंधयुग : पाठ और प्रदर्शन, पृ ठ :17
2. धर्मवीर भारती से साक्षात्कार, पृ0 : 7–8
3. उपरिवत् पृ0 : 10
4. उपरिवत् पृ0 : 11
5. उपरिवत् पृ0 : 11
6. ध्र्मवीर भारती से साक्षात्कार, पृ0 : 12
7. उपरिवत् पृ0 : 12
8. ध्र्मवीर भारती की साहित्य–साधना (डॉ0 ध्र्मवीर भारती का संक्षिप्त जीवन–परिचय) पृ0 : 745
9. उपरिवत् पृ0 : 745 – 746
10. उपरिवत् पृ0 : 746 – 44
11. धर्मवीर भारती ग्रंथावली, तृतीय खण्ड पृ0:16
12. उपरिवत् पृ0 : 17
13. उपरिवत् पृ0 : 19
14. उपरिवत् पृ0 : 43
15. उपरिवत् पृ0 : 61